वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 331
ISBN 978-93-80353-81-4

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर काव्य कथानक

–मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद–

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

–रचयित्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 292943

प्रथम संस्करण	वी.नि.सं. 2537	मूल्य
2200 प्रतियाँ	अप्रैल 2011	12/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
–: निर्देशन :–
पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज
–: सम्पादक :–
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज का प्रतिभाशाली व्यक्तित्व आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उन्होंने अपने निःस्वार्थ त्याग, करुणा, वात्सल्य, धर्मप्रभावना, संस्कृति सुरक्षा आदि सत्कृत्यों के द्वारा अपने नाम को अमरत्व प्रदान कर दिया है। लुप्त हो रही मुनि परम्परा को पुनः जीवंत करने वाले उन गुरूणांगुरु आचार्यश्री के उपकारों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

उन आचार्यश्री की अनुकम्पा से जन-जन को परिचित कराने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस वर्ष 2011-2012 को ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के नाम से घोषित किया है तथा समय-समय पर पूरे वर्ष के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने की प्रेरणा प्रदान करती रही हैं। आचार्यश्री से संबंधित विभिन्न प्रकार का साहित्य भी यथासमय प्रकाशित होकर आप सभी तक पहुँचाया जा रहा है। इसी शृँखला में पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा आचार्यश्री के जीवन के अधिकांश

महत्वपूर्ण अंशों को काव्यों के माध्यम से रच करके इस लघुकाय पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। इसमें उनके (आचार्यश्री) के जन्म से लेकर समाधिमरण तक का इतिहास समाविष्ट है। चूँकि यह सत्य है कि आचार्यश्री के गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है परन्तु इसी के साथ इस सत्य को भी स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है कि सूर्य की आरती उतारने के लिए दूसरा सूर्य नहीं लाया जाता अपितु एक छोटे से दीपक से ही सूर्य की आरती उतार करके आत्मसंतुष्टि करनी पड़ती है, ऐसे ही अपने टूटे-फूटे शब्दों के माध्यम से ही हम उन विशाल व्यक्तित्व के धारी महान आचार्यश्री की स्तुति आदि करके आत्मसंतुष्टि कर लेते हैं।

इन काव्य कथानकों का आप लोग दशलक्षण पर्व, आष्टान्हिक पर्व आदि प्रसंगों पर मंचन भी करा सकते हैं तथा पुस्तक में प्रकाशित चालीसा, भजन, आरती आदि के माध्यम से गुरूणांगुरु की भक्ति करके अपने जीवन को धन्य बनाएँ, यही इसकी सार्थकता है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

दो शब्द

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

अहिंसा प्रधान जैनधर्म में मुख्यरूप से तीन रत्न माने गये हैं-देव-शास्त्र और गुरु। जैसा कि आप लोग पूजा में पढ़ते भी हैं-'देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार'। इन तीन रत्नों की उपासना करने से तीन ही अन्य रत्नों की प्राप्ति भी होती है जैसे-देव अर्थात् जिनेन्द्र भगवान की पूजा-आराधना करने से सम्यग्दर्शनरूपी अमूल्य रत्न प्राप्त होता है जो कि मोक्ष को प्राप्त कराने में प्रधान निमित्त है, ऐसे ही शास्त्र अर्थात् जिनवाणी माता सरस्वती की उपासना-अर्चना आदि करने से सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा गुरु की भक्ति-श्रद्धा करने से सम्यक्चारित्ररूपी बहुमूल्य रत्न प्राप्त हो जाता है।

इन तीनों रत्नों में से भी गुरुरूपी रत्न को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि गुरु के बिना व्यक्ति का जीवन अंधकारमय रहता है। गुरु ही अपने ज्ञानरूपी प्रकाश से जिनेन्द्र भगवान की वाणी को बताकर प्राणीमात्र के अंदर दिव्य ज्ञानज्योति को प्रज्वलित कर देते हैं, इसलिए हमेशा अपना जीवन गुरु के सान्निध्य में ही व्यतीत करने का प्रयास करना चाहिए।

इस लघु पुस्तिका में एक ऐसे महान गुरूणांगुरु चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज का जीवन चरित्र काव्य कथानकों के रूप में प्रकाशित है, जिन्होंने बीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर त्याग के क्षेत्र में एक अविस्मरणीय योगदान प्रदान किया, अनेकों बार पशुओं एवं मनुष्यकृत उपसर्गों को सहन करने वाले वे महान योगीराज मुनिपरम्परा के पुनरुद्धारक होने के साथ ही साथ सौम्यता, सरलता, सहजता, सहनशीलता आदि विशिष्ट गुणों के धारी भी थे।

पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने आचार्यश्री के जीवन की विभिन्न घटनाओं को काव्यों के माध्यम से रच करके इसे बहुत रोचक बना दिया है। इन कथानकों को पढ़कर आप भी उनके निःस्पृही जीवन से कुछ न कुछ प्रेरणा अवश्य प्राप्त करें, यही पुस्तक को पढ़ने का सार है।

इन काव्य कथानकों की वीडियो सी.डी.भी बनी हुई है। आप जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से वी.सी.डी. मंगाकर उसे स्वयं देखें तथा सार्वजनिक स्थलों पर सी.डी. दिखाकर जनसाधारण को भी आचार्यश्री के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व से परिचित कराएँ।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती १०८ श्री शांतिसागर जी महाराज

स्वस्ति श्री मूलसंघ में कुंदकुंदाम्नाय, सरस्वती गच्छ, बलात्कार गण में बीसवीं शताब्दी में प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य-चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं।

जन्म –आषाढ़ बदी 6, सन् 1872

ग्राम –ग्राम-भोजगाँव (जिला-बेलगाँव) कर्नाटक

नाम –सातगौंडा पाटिल

माता-पिता –माता-सत्यवती, पिता-भीमगौंडा पाटिल

क्षुल्लक दीक्षा –ज्येष्ठ शु. 13, सन् 1914, ग्राम-उत्तूर (जि. कोल्हापुर) महाराष्ट्र

दीक्षा गुरु –मुनि 108 श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज

ऐलक दीक्षा –सन् 1917 गिरनार क्षेत्र, भगवान नेमिनाथ के चरण सानिध्य में

मुनि दीक्षा –फाल्गुन शु. 14, सन् 1920, ग्राम-यरनाल (जिला-बेलगांव) कर्नाटक

दीक्षा गुरु –मुनि श्री 108 देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज

आचार्य पद –आश्विन शु. 11, सन् 1924 ग्राम-समडोली (जिला-सांगली-महाराष्ट्र) द्वारा-चतुर्विध संघ

चारित्र चक्रवर्ती पद –सन् 1937, गजपंथा सिद्धक्षेत्र (महा.)

समाधिमरण –द्वि. भाद्रपद शु. 2, सन् 1955, कुंथलगिरि (सिद्धक्षेत्र)

आचार्य देव ने अनेक दीक्षाएँ देकर चतुर्विध संघ सहित दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सारे भारत में मंगल विहार करके दिगम्बर जैन मुनि परंपरा को पुनरुज्जीवित किया। अनेक तीर्थों पर जिनप्रतिमाएँ स्थापित करायीं, षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराकर जिनवाणी को स्थायित्व प्रदान किया। ऐसे बहुत से जिनधर्म प्रभावना के कार्यों से इस भूतल पर अपने यश को चिरस्थायी कर दिया।

आपने अंत में कुंथलगिरि क्षेत्र पर सल्लेखना लेकर अपने जीवनकाल में अपना आचार्यपद अपने प्रथम शिष्य मुनि श्री वीरसागर को प्रदान कर दिया था। पुनः उनकी परम्परा में द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर मुनिराज हुए, तृतीय पट्टाचार्य श्री धर्मसागर महाराज, चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर महाराज, पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज हुए हैं उसी शृँखला में वर्तमान पट्टाचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज, चतुर्विध संघ का संचालन करते हुए जिनधर्म की प्रभावना कर रहे हैं।

G

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर काव्य कथानक

(दशलक्षण पर्व में 10 दिन इस काव्य कथानक का मंचन भी कर सकते हैं)

(1)

जन्म, बाल विवाह एवं ब्रह्मचारी जीवन

भव्यात्माओं! संसार के रंगमंच पर अनन्त प्राणी अपना-अपना जीवन व्यतीत करके चले जाते हैं और पुनः पुनः चारों गति में परिभ्रमण करते हुए चौरासी लाख योनियों में दुःख भोगते रहते हैं।

कभी कोई बिरले पुण्यात्मा जीव होते हैं जो मानव जीवन में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर अपने जन्म को सार्थक कर लेते हैं। ऐसे पुण्यात्मा जीवों में एक थे-बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी मुनि महाराज। जिन्होंने दिगम्बर जैन मुनियों की निर्दोष चर्या का पालन करके मुनि परम्परा का पुनरुद्धार किया।

प्रस्तुत है उन्हीं गुरूणां गुरु का संक्षिप्त जीवनवृत्त–

सुनो हम कथा सुनाते हैं-2,
प्रथमाचार्य शांतिसागर की, गाथा गाते हैं।। सुनो...।।टेक.।।

दक्षिण भारत के भोजग्राम, में भीमगौंड पाटिल थे।
वे सत्यवती पत्नी के संग, सुखदुख में शामिल थे।।
उन्हीं का पुण्य बताते हैं,
इस पुत्र को दे जन्म बड़ा वे, हर्ष मनाते हैं।।सुनो..।।1।।

सन् अट्ठारह सौ बहत्तर, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी थी।
तेजस्वी बालक को पा, माँ सत्यवती हर्षी थीं।
दान तब पिता लुटाते हैं,
नाम सातगौंडा रख पुत्र का, उत्सव मनाते हैं।।सुनो..।।2।।

शैशव से बाल्य अवस्था, पाई बालक ने जैसे।
इक कन्या के संग उसका, रच दिया ब्याह बस सबने।।
दुखद इक बात बताते हैं,

पत्नी की मृत्यू छह मास के ही, बाद दिखाते हैं।।सुनो..।।3।।

इस बाल विवाह से उनका, संबंध न कोई रहा था।
ब्रह्मचारी रहकर उनने, दूजा न विवाह किया था।।
सातगौंडा बतलाते हैं,
जिनधर्म की रक्षा के लिए वे, आगे आते हैं।।सुनो..।।4।।

पितुमात के मोह के कारण, घर त्याग नहीं कर पाए।
लेकिन स्वाध्यायादिक कर, नित मन वैराग्य बढ़ाए।।
धर्म का पथ अपनाते हैं,
वे ''चंदनामति'' माता-पिता का, मन न दुखाते हैं।।सुनो..।।5।।

(2)

गृहस्थ जीवन एवं परोपकार भावना

बंधुओं! आपने बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के विषय में प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की है कि दक्षिण भारत में उनका जन्म हुआ था। पुनः 9 वर्ष की अल्प आयु में ही उनका विवाह एक 6 वर्ष की कन्या से कर दिया गया और वह भी 6 माह के बाद मृत्यु का ग्रास बन गई अर्थात् उस युग में बालविवाह की परम्परा भारत की धरा पर पनप रही थी, जिस पर आगे चलकर सरकारी स्तर पर विरोध कानून भी लागू हुआ है। सातगौंडा नाम के बालक ने उसके बाद

समझदार होने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया अतः उनका पूरा जीवन बालब्रह्मचारी के रूप में ही व्यतीत हुआ।

उन्होंने 40 वर्ष तक घर में ही माता-पिता के पास रहकर अपना जीवन किस प्रकार कर्तव्यपालन में व्यतीत किया, यह आप सुनें इस काव्य में–

तर्ज –आओ बच्चों.....

आवो बन्धू! तुम्हें बताएँ, परिचय प्रथमाचार्य का।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।टेक.।।

देव-शास्त्र-गुरु भक्त युवक थे, श्री सातगौंडा पाटिल।
मात-पिता की सेवा करके, जीत लिया था उनका दिल।।
कहते हैं उनके जीवन में, धैर्य व शौर्य अपार था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।1।।

गाँव के श्रावक दिन भर खेत में, खेती करने जाते थे।
लेकिन सातगौंड पाटिल, दो घंटे खेत पे जाते थे।।
फिर भी उनको फसल से अपनी, मिलता खूब अनाज था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।2।।

खेत में पक्षी दाना चुगते, उनको नहीं भगाते थे।
पानी भी उनको देकर, पक्षियों की प्यास बुझाते थे।।
इसी दया के कारण उनका, भरा सदा भण्डार था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।3।।

उनका पुण्यपुराण 'चन्दनामती' जगत में गूँज रहा।
प्रौढ़-युवावस्था में उनको, ज्ञान लाभ भी खूब रहा।।
उनके मन में तो दीक्षा, लेने का पुण्य विचार था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।4।।

(3)

क्षुल्लक एवं मुनि दीक्षा

प्यारे भाईयों एवं बहनों! परोपकार की उत्कट भावना से ओतप्रोत सातगौंडा पाटिल का पुण्य प्रभाव आपने सुना और जाना है कि वे पशु-पक्षियों तक के प्रति भी कितनी करुणा प्रदर्शित करते थे।

आगे जाकर सन् 1912 तक उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया, उनके दोनों बड़े भाइयों का विवाह हो

गया। फिर वे स्वतंत्र होकर मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर हो गये अर्थात् अब उन्होंने जैनेश्वरी दीक्षा के लिए कदम बढ़ाए, उसी का प्रतिफल रहा कि हम सबने पाया शांतिसागर नामक एक जिनशासन सूर्य–

तर्ज –अरे रे.....

सुनो इक संत कहानी, कहूँ निर्ग्रन्थ कहानी,
श्री शांतिसागर मुनिराज की।।
शांतिसागर शांतिसागर बोलो बारम्बार,
बोलो सभी मिलके उनकी जयजयकार।
मुनिचर्या इनसे ही हुई है साकार,
उन गुरूणां गुरु को है नमस्कार।।सुनो.।।टेक.।।
ईसवी सन् उन्निस सौ बारह तक में,
उनके माता-पिता गये स्वर्गलोक में।
उनके सभी भाइयों का ब्याह हो गया,
सातगौंडा को अब घर से मोह न रहा।।सुनो.।।1।।
सन उन्निस सौ चौदह ज्येष्ठ शुक्ला तेरस थी,
उत्तूर में आये देवेन्द्रकीर्ति मुनि श्री।
उनसे विनयपूर्वक क्षुल्लक दीक्षा ले लिया,
अपनी मनोकामना को पूर्ण कर लिया।।सुनो.।।2।।

फिर तो कई नगरों का उद्धार हो गया,
क्षुल्लक सातगौंडा का प्रचार हो गया।
सन् उन्निस सौ बीस में यरनाल आ गये,
वहाँ अपने गुरु जी को फिर से पा गये।।सुनो.।।3।।
गुरुवर से दीक्षा का निवेदन किया था,
अपने त्याग भाव का प्रदर्शन किया था।
फाल्गुन शुक्ला चौदस मुनिदीक्षा हो गई,
शांतिसागर नाम से प्रसिद्धी हो गई।।सुनो.।।4।।
पुनः मूलाचार आदि ग्रंथ पढ़ लिया,
अपने गुरु को भी उसी रूप कर लिया।
यह थी मुनि शांतिसागर की विशेषता,
''चन्दनामती'' ये रत्नत्रय का तेज था।।सुनो.।।5।।

(4)

सर्प उपसर्ग, दो शिष्यों का समागम एवं आचार्यपद

जय बोलो प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज की जय।

मुनियों की सच्ची चर्या का पालन किया था मुनि श्री शांतिसागर जी ने, उनकी साक्षात् चर्या को अपनी आँखों से देखने वाले लोग आज भी देश में विद्यमान हैं। हम सभी

चतुर्थकाल के मुनियों की बात तो सुनते और पढ़ते हैं कि अग्नि- उपसर्ग, पशु आदि के उपसर्गों को मुनिगण सहन करते थे किन्तु पंचमकाल के इस युग में भी सर्प, मनुष्य और चीटियों का उपसर्ग सहने वाले आचार्य शांतिसागर महाराज सचमुच ही जिनकल्पी मुनियों की प्रतिकृति थे।

तर्ज –तीरथ करने चली सती.....

दीक्षा लेकर बने शांतिसागर निजकर्म जलाने को।
कैसे होते हैं मुनिवर, यह बतला दिया जमाने को।।दीक्षा..।।टेक.।

एक बार कोन्नूर गुफा में, शांतिसिंधु ध्यानस्थ हुए।
नागराज आकर मुनिवर के, पावन तन पर भ्रमण करे।।
मानो वे पाषाण बन गये, निज आतम निधि पाने को
निज आतम निधि पाने को.....।।दीक्षा...।।1।।

दो ब्रह्मचारी एक बार, मुनिवर के सम्मुख पहुँच गये।
बोले कलियुग में नहिं ऋद्धि, अतः आप मुनिवर नहिं हैं।।
गुरु ने आम्रवृक्ष का उदाहरण, दिया उन्हें समझाने को,
दिया उन्हें समझाने को।।दीक्षा...।।2।।

वे ही आगे बने वीरसागर व चन्द्रसागर मुनिवर।
शांतिसिंधु जैसा गुरु पाकर, किया उन्होंने जन्म सफल।।

बने तभी आचार्य प्रथम वे, चउविध संघ चलाने को,
चउविध संघ चलाने को।।दीक्षा...।।3।।

संघ सहित करके विहार, गुरुवर कुंथलगिरि पहुँच गये।
वहाँ देशभूषण कुलभूषण, मुनि चरणों के दर्श किये।।
उनकी प्रतिमा बनवाई, उनका इतिहास बताने को,
उनका इतिहास बताने को।।दीक्षा...।।4।।

जिनशासन का भाग्य खिल गया, ऐसे तपसी गुरु पाकर।
सहे बहुत उपसर्ग परीषह, गुरुवर ने मुनि पद पाकर।।
बने ''चन्दनामती'' और भी, मुनि मुक्तीपद पाने को,
मुनी मुक्तिपद पाने को।।दीक्षा...।।5।।

(5)

सेठ पूनमचंद घासीलाल द्वारा अणुव्रत ग्रहण एवं संघ भक्त बनकर मुनिसंघ को सम्मेदशिखर यात्रा कराना

भव्यात्माओं! जिनशासन के इस सूर्य का प्रकाश पूरी धरती पर फैला और कई भव्यात्माओं ने मुनिदीक्षा धारणकर आचार्य शांतिसागर महाराज को अपना गुरु बनाया।

आचार्यश्री के सान्निध्य को पाकर कई श्रावकों ने अणुव्रत भी धारण किये, उनमें से बम्बई के एक सेठ पूनमचंद घासीलाल का नाम बहुत प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है।

सन् 1927 में आचार्यश्री ने सप्तऋषि मुनियों के साथ संघ सहित दक्षिण से उत्तर भारत की ओर विहार किया था उसका संक्षिप्त कथानक इस काव्य कथा के माध्यम से प्रस्तुत है–

तर्ज –चलो सम्मेदशिखर चालो.....

सुनो इक पुण्यकथा सुन लो, पंचअणुव्रत की कथा सुन लो,
अणुव्रत का अतिशय लख तुम अणुव्रत धारण कर लो।।सुनो.।।टेक.।।

इक श्रावक ने गुरु से पंचअणुव्रत ग्रहण किया।
सत्य अहिंसा अरु अचौर्य, ब्रह्मचर्य का नियम लिया।।
परिग्रह का प्रमाण सुन लो,
पाँच पाप स्थूल त्याग का, चमत्कार सुन लो।।सुनो..।।1।।

परिग्रह सीमा बढ़ी तो श्रावक, मुनिसंघ में आए।
वे पूनमचंद घासीलाल जी, श्रेष्ठी कहलाए।।
गुरुभक्ती की कथा सुन लो,
श्री सम्मेदशिखर यात्रा का, भाव बना सुन लो।।सुनो..।।2।।

श्री आचार्य शांतिसागर का, संघ चला आगे।
संघभक्त वे श्रावक भी चले, यात्रा करवाने।।
यही इतिहास सभी सुन लो,
उत्तर भारत में मुनिसंघ विहार कथा सुन लो।।सुनो..।।3।।

यह सम्मेदशिखर की यात्रा, बनी चमत्कारी।
प्रथम पंचकल्याण महोत्सव, हुआ वहाँ भारी।।
गुरु उपकार कथा सुन लो,
परतंत्र के युग में स्वतंत्र मुनि संघ कथा सुन लो।।सुनो..।।4।।

राजाखेड़ा में प्राणांतक, हमला हुआ संघ पर।
फिर भी अभयदान दे सबको, क्षमा धरी उन पर।।
गुरु की महिमा तुम सुन लो,
संकट अरु उपसर्ग सहन की, शक्ति प्रगट कर लो।।सुनो..।।5।।

संघपती जौहरी श्री मोतीलाल ने दीक्षा ली।
जिनमंदिर बनवा गेंदनमल, ने भी दीक्षा ली।।
यही संस्कार कथा सुन लो,
ऐसे गुरु के चरण ''चन्दनामती'' सदा नम लो।।सुनो..।।6।।

(6)

बाहुबली प्रतिमा निर्माण एवं षट्खण्डागम को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण करने की प्रेरणा

कहते हैं कि ''गुरु की महिमा वरणी न जाय, गुरु नाम जपो मन वचन काय'' अर्थात् एक गुरु के निमित्त से न जाने कितने प्राणियों का हृदय परिवर्तन हो जाता है और वे हैवान से इंसान ही क्या भगवान् तक भी बन जाते हैं।

इसी प्रकार आचार्य श्री शांतिसागर महाराज ने जहाँ अनेक गृहस्थ मनुष्यों को सदाचारी बनाया, अनेक श्रावक-श्राविकाओं को व्रती, क्षुल्लक, मुनि, आर्यिका बनाया, वहीं उन्होंने कुम्भोज में भगवान बाहुबली की प्रतिमा निर्माण हेतु प्रेरणा दी, षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराकर उसे युग-युग के लिए स्थायित्व प्रदान किया। इन्हीं सब बातों का वर्णन है इस काव्य कथानक में–

तर्ज –एक था बुल और एक थी बुलबुल.....

प्रथमाचार्य शांतिसागर की, गुणगाथा सब मिल गाओ।
हे भव्यात्मन्! उनकी गौरव-गाथा सबको बतलाओ।।
प्रथमाचार्य.....।।टेक.।।

श्री कुम्भोज में बाहुबली, प्रतिमा निर्माण प्रेरणा दी।
श्री समन्तभद्र मुनिवर को, तीर्थ विकास प्रेरणा दी।।
कहा उन्होंने कल्पवृक्ष सम प्रतिमा तीर्थ पे पधराओ।।
प्रथमाचार्य....।।1।।
सन् उन्निस सौ चव्वालिस में, गुरुवर को यह ज्ञात हुआ।
ताड़पत्र पर लिखित धवल, ग्रंथों का बहुतहि घात हुआ।।
बोले श्रुत की रक्षा हेतू विद्वानों को बुलवाओ।।
प्रथमाचार्य....।।2।।
संघपती ने खोज कराकर, उन ग्रंथों को मंगवाया।
ताम्रपट्ट पर उत्कीरण कर, उन्हें सुरक्षित करवाया।।
गुरु ने कहा अब हिन्दी में अनुवाद सभी का करवाओ।।
प्रथमाचार्य....।।3।।
श्रुतरक्षा के प्रति गुरु का, उपकार सदा स्मरण करो।
फल्टण अरु बम्बई में विराजित, उन ग्रंथों को नमन करो।।
अपने मंदिर में भी हिन्दी सहित ग्रंथ को पधराओ।।
प्रथमाचार्य....।।4।।
हीरक जन्म महोत्सव गुरु का, फल्टन नगरी में आया।
हाथी पर धवला ग्रंथों का, महाजुलूस निकलवाया।।
आज भी तुम ''चन्दनामती'' गुरु उपकारों को दरशाओ।।
प्रथमाचार्य....।।5।।

(7)

आचार्य शांतिसागर जी का अंतिम प्रवचन

महानुभावों! आचार्यश्री शांतिसागर महाराज ने क्षुल्लक और ऐलक अवस्था में 6 वर्ष बिताए और मुनि अवस्था में 35 वर्ष 6 माह तक कठिन तपस्या की। अर्थात् 41 वर्ष 6 माह का उनका जीवन पिच्छी-कमण्डलु सहित व्यतीत हुआ तथा लगभग इतना ही समय उनका घर में भी वैराग्य भाव के साथ बीता था। मतलब यह है कि लगभग 82 वर्ष की आयु तक आचार्यश्री मनुष्य पर्याय में रहे और अंतिम समाधि से 10 दिन पूर्व 26वें उपवास में उन्होंने अपना अंतिम संदेश सम्पूर्ण जैन समाज के लिए प्रस्तुत किया था, जो टेपरेकार्डर में रेकार्ड हुआ और आज भी कैसेट-सी.डी. आदि के माध्यम से सुना जाता है–

तर्ज –माई रे माई.....

प्रथमाचार्य शांतिसागर का, अन्तिम प्रवचन सुन लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।टेक.।।

जिनवर के लघु नन्दन मुनिवर, मुनिव्रत पालन करते।
उग्र-उग्र तप करने हेतू, किये अनेकों व्रत थे।।
दस हजार उपवास की संख्या, सुनकर चिंतन कर लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।1।।

बारह वर्षीय सल्लेखना, धारण की थी गुरुवर ने।
अन्त समाधि से दस दिन पहले, प्रवचन किया था उनने।।
वही अमर संदेश था अंतिम, ध्यान से उसको सुन लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।2।।

वीर सिन्धु मुनिवर को अपना पट्टाचार्य बनाया।
संघपति से पत्र लिखाकर जयपुर में भिजवाया।।
पट्टाचार्य प्रथम की महिमा, भी ग्रंथों में पढ़ लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।3।।

बिन संयम सम्यक्त्व के जीवन, में संभव न समाधी।
संयम धारण करो-डरो मत, मिटेगी तब भव व्याधी।।

कहा धर्म का मूल दया, 'चन्दनामती' सब सुन लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।4।।

(8)

आचार्य की समाधि एवं ज्ञानमती माताजी को गुरुदेव का दर्शन लाभ

बंधुवर! यह संक्षिप्त जीवन परिचय और आचार्यश्री का कृतित्व कुछ काव्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

सन् 1955 में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज ने कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर यमसल्लेखना ली थी। आज उनकी औदारिक काया संसार में हमारे समक्ष नहीं है किन्तु उनकी अमर यशःकाया सदैव जीवन्त रहेगी अतः उनके उपदेशों को अमल में लाकर सदैव गुरु भक्ति करते हुए अपने जीवन को सफल बनाने हेतु गुरुवर की अंतिम समाधि का चित्रण इस काव्य कथानक के माध्यम से श्रवण कीजिए–

तर्ज –धीरे धीरे बोल.....

शांतिसिन्धु सूरिवर की वंदना करूँ,
वंदना करूँ-गुरुवन्दना करूँ।
वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।
शांतिसिंधु...।।टेक.।।

सन् उन्निस सौ पचपन में कुंथलगिरि,
पर्वत पर अन्तिम समाधि घोषित करी।
जन सागर उमड़ा कुंथलगिरि तीर्थ पर,
लाखों जनता धन्य हुई गुरु दर्श कर।।
वन्दन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।शांतिसिंधु...।।1।।

ज्ञानमती माताजी थीं तब क्षुल्लिका,
गुरु समाधि दर्शन हेतू पहुँची वहाँ।
संग में एक विशालमती थीं क्षुल्लिका,
और न जाने कितने श्रावक श्राविका।।
वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।शांतिसिंधु...।।2।।

छत्तिस दिन की यम सल्लेखना पूर्ण की,
भादों शुक्ला दुतिया की तिथि आ गई।

कहा ''ॐ सिद्धाय नमः'' बस चल दिये,
नश्वर तन को छोड़ स्वर्ग में बस गये।।
वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।शांतिसिंधु...।।3।।

धर्मसूर्य हो गया अस्त मानो यहाँ,
किन्तु रश्मियों को अपनी बिखरा गया।
इसीलिए मुनि परम्परा जीवन्त है,
तभी ''चन्दनामती'' धरा पर सन्त हैं।।
वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।शांतिसिंधु...।।4।।

शांतिसागराचार्य वर्ष यह चल रहा,
गुरुवर का उपकार स्मरण कर रहा।
ज्ञानमती माताजी की सम्प्रेरणा,
है यह सबके मन में जागे चेतना।।
वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।शांतिसिंधु...।।5।।

श्री शांतिसागर स्तुतिः

-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–उपजाति छन्द –

सुरत्नत्रयैः सद्व्रतैर्भ्राजमानः। चतुःसंघनाथो गणीन्द्रो मुनीन्द्रः।।
महा-मोह-मल्लैक-जेता यतीन्द्रः। स्तुवे तं सुचारित्रचक्रीशसूरिम्।।1।।

भवव्याधिनाशाय दिग्वस्त्रधारी। भवाब्धेः तितीर्षुः जगद्दुःखहारी।।
भवातंकविच्छित्तयेहं श्रितस्त्वां। स्तुवे शांतिसिंधुं महाचार्यवर्यं।।2।।

महाग्रंथराजं सुषट्खण्डशास्त्रं। सुताम्रस्य पत्रे समुत्कीर्णमेव।।
अहो! त्वत्प्रसादात् महाकार्यमेतत्। प्रजातं सुपूर्णं चिरस्थायि भूयात् ।।3।।

जिनानां सुमूर्त्तीः प्रतिष्ठाप्य भक्त्या। त्वयानेकतीर्थं कृतं भारतेस्मिन्।।
अनेके सुशिष्याः प्रसिद्धास्तवेह। स्तुवे वीरसिंधुं महाचार्यवर्यं।।4।।

महासाध्वोऽप्यार्यिकाः क्षुल्लकाद्याः। प्रसादात् हि ते श्रावकाद्याश्च जाताः।।
सुनक्षत्रवृंदैर्युतश्चंद्रमाः खे । सुसंघैर्युतः शांतिसूरिः स्तुवे त्वां।।5।।

महाकल्पवृक्षं महाचार्यरत्नं । कृपासागरं शांतिसज्ज्ञानमूर्तिम्।।
गभीरं प्रसन्नं महाधीरवीरं । महातीर्थभक्तं सदा त्वां प्रवन्दे।।6।।

–पृथ्वी छंद –

नमोऽस्तु मुनिचंद्र! ते भविककैरवाल्हादकृत् ।
नमोऽस्तु मुनिसूर्य! ते जनमनोऽन्धकारांतकृत्।।
नमोऽस्तु गुरुवर्य! ते सकलभव्य-चिंतामणे!
जयेति जय सूरिवर्य! भुवि शांतिसिंधो! सदा।।7।।

–अनुष्टुप् छन्द –

श्रीशांतिसागराचार्यं, वंदे भक्त्या पुनः पुनः।
बोधिर्ज्ञानमती सिद्धि-र्भूयात् मे पूर्ण-शांतिदा।।8।।

आचार्य श्री शांतिसागर चालीसा

–दोहा–

सन्मति शासन को नमूँ, नमूँ शारदा सार।
कुन्दकुन्द आचार्य की, महिमा मन में धार।।1।।
इसी शुद्ध आम्नाय में, हुए कई आचार्य।
सदी बीसवीं के प्रथम, शान्तिसागराचार्य।।2।।
ये चारित चक्री मुनी, गुरुओं के गुरु मान्य।
चालीसा इनका कहूँ, पढ़ो सुनो धर ध्यान।।3।।

–चौपाई–

जय श्री गुरुवर शान्तीसागर, मुनि मन कमल विकासि दिवाकर।।1।।
इस कलियुग के मुनिपथदर्शक, नमन करूँ गु चरणों में नित।।2।।
शास्त्रों में मुनियों की महिमा, लोग पढ़ा करते थे गरिमा।।3।।
भूधर द्यानत की कविताएँ, कहती हैं उन हृदय व्यथाएं।।4।।
वे तो तरस गये दर्शन को, आगम वर्णित मुनि वन्दन को।।5।।
नग्न दिगम्बर चर्या दुर्लभ, थी सौ वर्ष पूर्व धरती पर।।6।।
तब दक्षिण भारत ने पाया, एक सूर्य सा तेज दिखाया।।7।।
भोज ग्राम का पुण्य खिला था, वहाँ सुगन्धित पुष्प खिलाया।।8।।
सत्यवती की बगिया महकी, भीमगौंडा की खुशियाँ झलकीं।।9।।

नाम सातगौंडा रक्खा था, बचपन से ही ज्ञानी वह था।।10।।
बाल विवाह किया बालक का, तो भी वह ब्रह्मचारीवत् था।।11।।
उनके मन वैराग्य समाया, जब श्री गुरु का दर्शन पाया।।12।।
श्री देवेन्द्र कीर्ति मुनिवर से, उन्नीस सौ चौदह के सन् में।।13।।
क्षुल्लक दीक्षा ली उत्तुर में, श्री शान्तीसागर बन चमके।14।।
फिर उन्निस सौ बीस में उनसे, दीक्षा ले मुनिराज बने थे।।15।।
मूलाचार ग्रंथ को पढ़कर, मुनिचर्या बतलाई घर-घर।।16।।
समडोली की जनता ने तब, पदवी दी आचार्य बने तुम।।17।।
संघ चतुर्विध बना तुम्हारा, जैनधर्म का बजा नगाड़ा।।18।।
दक्षिण से उत्तर भारत तक, कर विहार फैलाया था यश।।19।।
अंग्रेजों के शासन में तुम, पहुँचे इन्द्रप्रस्थ में ले संघ।।20।।
उनको गुरु का दर्श मिला था, जैन दिगम्बर पंथ खुला था।।21।।
धवल ग्रन्थ उद्धार कराया, नया प्रकाशन था करवाया।।22।।
पैंतिस वर्ष के मुनि जीवन में, साढ़े पच्चिस वर्ष तक तुमने।।23।।
उपवासों में समय बिताया, परम तपस्वी थी तुम काया।।24।।
सर्प ने तन पर क्रीड़ा कर ली, विष न चढ़ा पाया विषधर भी।।25।।
ली उत्कृष्ट समाधी तुमने, कुंथलगिरि पर सन् पचपन में।।26।।
भादों शुक्ला दुतिया तिथि में, करी समाधी प्रभु सन्निधि में।।27।।
पुनः वीरसागर मुनिवर ने, गुरु आज्ञा अनुसार शिष्य ने।।28।।
प्रथम पट्ट सूरी पद पाया, कुशल चतुर्विध संघ चलाया।।29।।

सन् उन्निस सौ सत्तावन में, शिवसागर आचार्य बने थे।।30।।
इसके बाद तृतीय पट्ट पर, था दिन सन् उन्नीस सौ उन्हत्तर।।31।।
धर्मसिन्धु आचार्य प्रवर बन, किया संघ का शुभ संचालन।।32।।
सन् उन्निस सौ सत्तासी में, चौथे सूरी अजित सिन्धु ने।।33।।
परम्परा क्रम में पद पाया, छत्तिस गुण को था अपनाया।।34।।
नब्बे सन् में पंचम पदवी, श्री श्रेयांससिन्धु मुनि को दी।।35।।
सन् उन्निस सौ बानवे से फिर, बने सूरि अभिनन्दनसागर।।36।।
संघ चलाते सक्षमता से, शिष्यों के प्रति वत्सलता है।।37।।
श्री चारित्र चक्रवर्ती की, परम्परा के छठे पुष्प ये।।38।।
बढ़ा रहे निज गु की महिमा, दिन-दिन बढ़ती संघ मधुरिमा।।39।।
चलता रहे यही क्रम उत्तम, निष्कलंक परमेष्ठि सूरि बन।।40।।

–दोहा–

नमन शान्तिसागर गुरू, नमन ज्ञानमति मात।
उनकी शिष्या चंदना-मती रचित यह पाठ।।1।।
वीर संवत् पच्चीस सौ, बाइस शुभ तिथि जान।
श्रावण कृष्णा अष्टमी, पूरण गुरु गुणगान।।2।।
गुरुमणि माला परम्परा, का हो जग में वास।
वीरांगज मुनि तक रहे, यह निर्दोष प्रकाश।।3।।

भजन

तर्ज–धरती का.....

सन्तों का तुम्हें नमन है, युग पुरुषों का वन्दन है।
प्रथमाचार्य शांतिसागर को, सौ सौ बार नमन है।।
सौ सौ बार नमन है-2।। टेक.।।

आदिनाथ से महावीर तक जिनचर्या बतलाई।
कुन्दकुन्द ने उसी तरह की मुनिचर्या अपनाई।।
शांतिसिन्धु भी उसी श्रृंखला के ही लघुनन्दन हैं।
सौ सौ बार नमन है.....।।1।।

दक्षिण भारत वसुन्धरा का है इतिहास गवाही।
भोजग्राम माँ सत्यवती का पुत्र मुक्तिपथ राही।।
प्रथम बने आचार्यप्रवर युगप्रमुख तुम्हें वन्दन है।
सौ सौ बार नमन है.....।।2।।

लुप्तप्राय यतिचर्या को जीवन्त किया था तुमने।
नग्न दिगम्बर मुद्रा को श्रुतवंत किया था तुमने।।
इसीलिए ''चन्दनामती'' जग करता तव वन्दन है।
सौ सौ बार नमन है.....।।3।।

भजन

तर्ज–मैं चंदन बनकर.....

इस युग के पहले गुरुवर, हैं शांतीसागर जी।
इस युग के पहले मुनिवर हैं, शांतीसागर जी।। इस...।।
।।टेक.।।

दक्षिण भारत के येळगुळ, में जनम हुआ था इनका।
माँ सत्यवती के नंदन, श्री शांतीसागर जी।।1।।

देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से, क्षुल्लक अरु मुनि दीक्षा ली।
आचार्य प्रथम कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।2।।

मूलाचारादिक पढ़कर, मुनिचर्या बतलाई थी।
गुरुओं के गुरु कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।3।।

धवला आदिक ग्रंथों का, भी जीर्णोद्धार कराया।
उपसर्गजयी कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।4।।

''चन्दनामती'' उन गुरुवर, को कोटी कोटि नमन है।
वे शीघ्र मोक्षपद पाएं, श्री शांतीसागर जी।।5।।

भजन

तर्ज–सुहानी जैनवाणी.....

दिगम्बर प्राकृतिक मुद्रा, विरागी की निशानी है।
कमण्डलु पिच्छिधारी नग्न मुनिवर की कहानी है।। टेक.।।

दिशाएँ ही बनीं अम्बर न तन पर वस्त्र ये डालें।
महाव्रत पाँच समिति और गुप्ती तीन ये पालें।।
त्रयोदश विधि चरित पालन करें जिनवर की वाणी है।।
कमण्डलु.....।।1।।

बिना बोले ही इनकी शान्त छवि ऐसा बताती है।
मुक्ति कन्यावरण में यह ही मुद्रा काम आती है।।
मोक्षपथ के पथिकजन को यही वाणी सुनानी है।
कमण्डलु.....।।2।।

यदि मुनिव्रत न पल सकता तो श्रावक धर्म मत भूलो।
देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा परम कर्तव्य मत भूलो।।
बने मति 'चन्दना' जैसी यही ऋषियों की वाणी है।।
कमण्डलु.....।।3।।

भजन

तर्ज–तेरी दुनिया से दूर.....

गुरुवर शांतीसागर, थे इस युग के रत्नाकर, उन्हें याद रखना।।
।।टेक.।।

सुनते हैं जो इनकी मुनिचर्या की कहानी, रोमाँच होता है,
रोमाँच होता है, मन में भान होता है।
उनके जैसा त्यागी, तपस्वी कोई मुनिवर, न प्राप्त होता है,
न प्राप्त होता है, न प्राप्त होता है।।
थे वे ज्ञान के भण्डार, उनमें शांति थी अपार, उन्हें याद रखना।।1।।
बीसवीं सदी के, चारित्र चक्रवर्ती, श्री शांतिसागर जी,
श्री शांतिसागर जी, गुरुवर शांतिसागर जी।
मुनिपथ प्रदर्शक, आचार्य प्रथम थे, वे चउसंघ नायक जी,
चउसंघ नायक जी, गुरुवर मूलनायक जी।।
थे दश धर्मों के भण्डार, उनमें धैर्य था अपार, उन्हें याद रखना।।2।।
भादों सुदी दुतिया, को पुण्यतिथि उनकी, मनाते हैं सभी,
मनाते हैं सभी, उनको ध्याते हैं सभी।
उनकी स्मृतियों के, दर्पण में निज को, सजाते हैं सभी,
सजाते हैं सभी, निज को ध्याते हैं सभी।।
उनकी यादों का संसार, 'चंदना' है भण्डार, उन्हें याद रखना।।3।।

भजन

तर्ज –चल दिया छोड़.....

श्री शांतिसिंधु मुनिराज, जगत सरताज, प्रथम ऋषिराजा
युग के मुनि मार्ग विधाता।।
थे भोजग्राम के राजकुंवर।
माँ सत्यवती के पुत्रप्रवर।।
जन्मे जग के कल्याण हेतु सुखदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।1।।

जैसे रवि तिमिर भगाता है।
जग में प्रकाश फैलाता है।
यूं ही मिथ्यात्व तिमिरनाशक गुरु गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।2।।

मुनि के दर्शन जब दुर्लभ थे।
देवेन्द्रकीर्ति इक गुरुवर थे।।
वे बने शांतिसागर मुनि के निर्माता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।3।।

मुनिचर्या तब जीवन्त हुई।
जिनवाणी सार्थक सिद्ध हुई।।

कलियुग भी सत्पुरुषों का जन्मप्रदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।4।।

है वर्तमान गौरवशाली।
उस एक वृक्ष की ही डाली।।
फल फूल रही वंशावलि गौरव गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।5।।

आचार्य प्रथम वे मान्य हुए।
युग में सबसे प्राधान्य हुए।।
उत्कृष्ट समाधिमरण से जोड़ा नाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।6।।

हम भी परोक्ष यशगान करें।
गुरुवर का मन में ध्यान करें।।
''चन्दनामती'' वन्दना करें नत माथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।7।।

भजन

तर्ज –वन्दन शत शत बार है.....

मेरा नम्र प्रणाम है,
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।
कलियुग में भी जिनका दर्शन करता जग कल्याण है।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।टेक.।।

जिनके तप की कथा सदा, ग्रन्थों में पढ़ी पुरानी है।
कवियों ने जिन मुनियों की, कविता में कही कहानी है।।
भारत की धरती ही उन, सन्तों की मानो खान है।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।।1।।

सदी बीसवीं में गुरु शांतीसागर प्रथमाचार्य हुए।
घोर तपस्या करके युग को, कई संत मुनिराज दिये।।
तभी आज मुनियों के दर्शन ही मानो शिवधाम हैं।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।2।।

काय में उत्तम बल नहिं है, फिर भी चर्या प्राचीन है।
वही मूलगुण वही परीषह, शास्त्रों के आधीन हैं।।
ब्रह्मचर्य का पालन जिनके, जीवन का आयाम है।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।3।।

आरती

तर्ज–मन डोले, मेरा .....

जय जय गुरुवर, हे सूरीश्वर, श्री शांतिसिन्धु महाराज की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।टेक.।।

जग में महापुरूष युग का, परिवर्तन करने आते ।
अपनी त्याग तपस्या से वे, नवजीवन भर जाते ।।
गुरुजी नवजीवन.....
जग धन्य हुआ, तव जन्म हुआ, मुनि परम्परा साकार की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

कलियुग में साक्षात् मोक्ष की, परम्परा नहिं मानी।
फिर भी शिव का मार्ग खुला है, जिस पर चलते ज्ञानी।।
गुरु जी जिस पर.....
मुनि पद पाया, पथ दिखलाया, चर्या पाली जिननाथ की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

मुनि देवेन्द्रकीर्ति गुरुवर से, दीक्षा तुमने पाई।
भोजग्राम माँ सत्यवती की, कीर्तिप्रभा फैलाई।।
गुरु जी कीर्तिप्रभा.....

हे शांतिसिन्धु, हे विश्ववन्द्य, तेरी महिमा अपरम्पार थी
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

परमेष्ठी आचार्य प्रथम तुम, इस युग के कहलाए।
सदियों सोई मानवता को, आप जगाने आए।।
गुरु जी आप.....
तपमूर्ति बने, कटुकर्म हने, उत्तम समाधि भी प्राप्त की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

श्री चारित्रचक्रवर्ती के, चरणों में वंदन है।
अहिविष भी ''चंदनामती'', तव पास बना चंदन है।।
गुरु जी .....
भव पार करो, कल्याण करो, मिल जावे बोधि समाधि भी,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।